RNI Regn.No.- 54447/78 स्थापित: 1978 Postal Reg. No. UA/NTL- 08/ 2024-26

पिघलता हिमालय

वर्ष 42 अंक 8 हल्द्वानी सम्वत् 2083 सोमवार 27 जुलाई 2026 एक प्रति 5 रु., वार्षिक-200 रु. आजीवन 2000 रु.

संस्थापक- स्व.आनन्द बल्लभ उप्रेती
स्व.दुर्गा सिंह मर्तोलिया,
स्व.श्रीमती कमला उप्रेती

editorpighaltahimalay@gmail.com
Website-
www.pighaltahimalay.com

सम्पादक : श्रीमती गीता उप्रेती
संरक्षक : फली सिंह दत्ताल
मंगल सिंह मर्तोलिया

प्रेम सिंह जंगपांगी से बातचीज

'इमला' का बचपन सीख दे गया

मदकोट का यह क्षेत्र जितना उपजाऊ रहा है उतना ही संस्कार और सीख देने वाला भी

बरपटिया समाज ने कृषि में उन्नत स्थान बनाया तो शौका समाज ने ऊनी कारोबार में

कोटाल गाँव, गोल्फा, इमला का एक ही स्कूल हुआ करता था जसपुरखान जो 1948 में शुरू हुआ। इसके विद्यार्थी विभिन्न क्षेत्रों में अग्रणीय रहे हैं

हरि प्रदर्शनी में घोड़ों सहित अन्य सामग्री के साथ बुजुर्गवार जाते थे और प्रतियोगिता में हिस्सा लेने के लिये घरेलू कुटीर उद्योगों का सामान सजता था

कार्यालय प्रतिनिधि

सीमान्त क्षेत्र मदकोट के 'इमला' गाँव को लेकर आज की विशेष बातचीत श्रीमान प्रेम सिंह जंगपांगी के साथ है। इमला गाँव की पहचान सिर्फ पहाड़ों से नहीं बल्कि यहाँ बसने वाले शौका और बरपटिया समाज की साझा विरासत से है। सांस्कृतिक रूप से खास घाटियों में इसकी गणना होती है। जोहार घाटी के इस क्षेत्र में गोरी और सहायक नदियां बहती हैं। अपनी संस्कृति और परम्परा को जीने वाले लोगों ने जिस जीवटता के साथ अपने को स्थापित किया वह प्रेरणादायक है। बैंकिंग सेवा में रहे श्रीमान प्रेम सिंह जी कहते हैं- ''इमला का बचपन सीख दे गया। आतिथ्य सत्कार का जो भाव बड़े-बुजुर्गों में था वह पीढ़ियों में है। माता पार्वती देवी गृहस्थ जीवन में जिस तनमयता के साथ हर आने वालों का मान-सम्मान करती थीं, उनका आशीर्वाद किसी न किसी रूप में हम सभी परिजनों को मिलता रहा है।''

बातचीज का यह सिलसिला आगे बढ़े उससे पहले श्री प्रेम सिंह जी के बारे में बताते हैं- बुर्फू में एक हुए मान सिंह जंगपांगी। इनके चार पुत्र एक पुत्री हैं, जिनमें रुद्रसिंह, मोहनसिंह, रामसिंह, मानधाता सिंह खिमुली देवी। अब यदि इनकी अगली पीढ़ी की बात करें तो रुद्रसिंह जी के सुपुत्र हुए- नन्दन सिंह, प्रेम सिंह। मोहन सिंह जी के गणेश सिंह, हरीश सिंह। राम सिंह जी के नरेन्द्र सिंह, भूपेन्द्र सिंह। मानधाता सिंह के पूरन सिंह, पुष्कर सिंह। खिमुली देवी का विवाह रावत परिवार में हुआ। वह दौर जब सीमान्त में सीमा पार व्यापार और मौसम अनुसार माइग्रेशन का का निश्चित समय था, जंगपांगी परिवार भी बुर्फू से घाटी में उतर आता। जाड़ों के दिनों में यह लोग भकुण्डा, इमला में आते। प्रेमसिंह जी का जन्म इमला में 1963 में हुआ।

बचपन की पाठशाला इमला में होने के कारण बचपन के वह दिन हमेशा याद करने वाले श्री जंगपांगी

शेष पृष्ठ 2 पर

लोक कथाएं—— यू.आर.टम्टा

लोमड़ी और बकरी

एक बार जंगली बकरी व लोमड़ी में मित्रता हो गई। यह मित्रता ऐसे दो लोगों में थी जो समानता के धरातल में दूर-दूर स्थित थे। एक निपट शाकाहारी, दूसरा- हिंसा व शिकारी प्रवृत्ति का, पर मित्रता तो मित्रता ही है। दो विपरीत स्वभाव के लोगों में मित्रता होना अव्यवहारिक होते हुये भी सम्भव है। हुआ यों कि बकरी चरते-चरते एक दिन लोमड़ी की गुफा के पास पहुँच गई। उस समय लोमड़ी अपनी गुफा में नहीं थी। वह शिकार की तलाश में दूर निकल गई थी। उसके नन्हें बच्चे गुफा से बाहर धूप में खेल रहे थे। तभी वहाँ एक बिलाव आया और लोमड़ी के बच्चों पर झपट पड़ा। नादान बच्चों की जान पर बन आई। यद्यपि यह बच्चे ही थे, पर थे तो बकरी के स्वाभाविक शत्रु ही। फिर भी, अपने सरल स्वभाव के मुताबिक, बकरी ने बच्चों को बचाने की सोची। उसके बड़े-बड़े नुकीले सींग थे। वह तुरन्त बिलाव से भिड़ गई और अपने नुकीले सींगों से उसका पेट फाड़ दिया, जिससे लोमड़ी के बच्चों की जान बच गई। वह वहीं पर रुक कर लोमड़ी की प्रतीक्षा करने लगी ताकि और काई दूसरा जीव उन मासूम बच्चों को नुकसान न पहुँचा सके। हालांकि बिलाव से लड़ाई करते समय वह स्वयं भी जख्मी हो गई थी, पर उसने अपने जख्मों की कतई परवाह नहीं की। उस समय उसका मुख्य ध्येय लोमड़ी के बच्चों की रक्षा करना था। जब दोपहर बाद लोमड़ी लौटी तो वह दूर से गुफा के पास खड़ी बकरी को देखकर अत्यन्त खुश हुई, क्योंकि आज उसे कोई शिकार नहीं मिला था। वह शिकार की तलाश में दूर-दूर भटक आई थी परन्तु शिकार दरवाजे पर खड़ा था। वह मन ही मन स्वयं को कोस रही थी कि वह शिकार से जल्दी लौट कर क्यों नहीं आ गई। फिर शिकार तो मौजूद था ही, इसलिये उसने सोचा कि देर से ही सही, आज बढ़िया शिकार मिल गया। पर वह ज्यों ही पास आई वहाँ का दृश्य देखकर स्तब्ध रह गई। उसके बच्चे डरे सहमे बकरी के बदन से चिपके थे। पास ही बिलाव की लाश पड़ी थी। खून जमीन में बिखर कर सूख गया था, पेट फटा पड़ा था। उसने गौर से बकरी के सींगों की ओर देखा, उनमें बिलाव के मुलायम बाल चिपके थे। जोमड़ी को यह समझते देर न लगी कि बिलाव का पेट बकरी ने ही फाड़ा है। लोमड़ी के आते ही बकरी बोली- 'बहन तुम बच्चों को छोड़करदूर मत जाया करो। आज बिलाव ने बच्चों को अकेला पाकर उन पर हमला कर दिया। यह तो अच्छा हुआ मैं चारे की तलाश में यहाँ तक आ पहुँची थी, जिससे तुम्हारे बच्चों की जान बच गई।' लोमड़ी का दिल गद्गद् हो गया। उसकी आँखों में आँसू आ गये। रूंधे गले से वह बोली- 'बहन आज तुमने मेरे ऊपर जो उपकार किया है, मै। उसे कभी नहीं भूल सकती। अहिंसक जीव होते हुये भी, तुमने मेरे बच्चों की जान बचाने के लिये, अपनी स्वयं की जान को खतरे में डाल दिया और प्रतिहिंसा का रुख अपना लिया। मैं तुम्हारी अत्यन्त आभारी हूँ। यह कहते हुये उसने अपने पंजों से अपने आँसू पोंछे। बकरी बोली- 'बहन कैसी बातें करती हों? बच्चे सब एक से होते हैं, क्या तुम्हारे, क्या मेरे। उनकी जान पर आ पड़ी थी, इसलिये यह मेरा कर्त्तव्य था कि मैं उनको बचाऊँ। हम लोग स्वभाव से हिंसक नहीं हैं परन्तु प्रतिरक्षा का अधिकार प्रकृति ने हमें भी दिया है। अपने लम्बे नुकीले सींग दिखाते हुये वह फिर बोली- 'प्रकृति ने हमें इतने मजबूत सींग कोई शोभा बढ़ाने के लिये नहीं दिये हैं। यह तो शत्रु से रक्षा करने के लिये मिले हैं। मुझे खुशी है कि आज इन्हीं सींगों के बल पर मैं तुम्हारे बच्चों

शेष पृष्ठ 5 पर

Print to PDF without this message by purchasing novaPDF (http://www.novapdf.com/)

पिघलता हिमालय

हल्द्वानी में हाईकोर्ट

उत्तराखण्ड हाईकोर्ट को नैनीताल से हल्द्वानी स्थानान्तरित करने के सुप्रीम कोर्ट के आदेश के बाद इसका असर दिखने लगा है। इससे हल्द्वानी को नई पहचान मिलेगी वहीं नैनीताल में होने वाले दबाव से छुटकारा मिलेगा। अभी तक यह कोर्ट नैनीताल के बार्न्सडेल भवन में चल रही है। यह भवन ब्रिटिश काल से ही सत्ता और शक्ति का केन्द्र रहा है। सन् 1900 में बना यह भवन आज भी आकर्षण का केन्द्र है। उत्तराखण्ड राज्य गठन के बाद 9 नवम्बर 2000 को नैनीताल में देश का 18 वां उच्च न्यायालय बना।

हाईकोर्ट नैनीताल में होना अच्छी बात है लेकिन सरोवरी नगरी में पर्यटन कारोबार के बीच भीड़चाल का भारी दबाव होने लगा था। इसको देखते हुए हल्द्वानी में नए परिसर की चर्चा होने लगी थी। 1 जनवरी 2017 को वरिष्ठ अधिवक्ता एम.सी. काण्डपाल ने तत्कालीन मुख्य न्यायाधीश के.एम.जोसेफ जस्टिस से हाईकोर्ट को हल्द्वानी शिफ्ट करने की मांग की। इसके बाद 2019 में पुनः तत्कालीन मुख्य न्यायाधीश अस्टिस रंगनाथन से यही मांग रखी, जिस पर हाईकोर्ट ने प्रदेश में जनमत संग्रह कराया। इसमें हाईकोर्ट को हल्द्वानी, रुड़की, देहरादून, हरिद्वार, रुद्रपुर, रामनगर, अल्मोड़ा आदि जगहों पर शिफ्ट करने सहित नैनीताल में ही रहने देने के सुझाव आए। 16 नवम्बर 2022 को मुख्यमंत्री पुष्कर धामी की अध्यक्षता में राज्य मंत्रिमण्डल ने सिद्धान्ततः कोर्ट को हल्द्वानी स्थानान्तरित करने के प्रस्ताव को मंजूरी दी। नैनीताल बार एसोसिएशन व व्यापारियों के विरोध के बाद बहस चल पड़ी।

मई 2024 में उत्तराखण्ड हाईकोर्ट ने हल्द्वानी के गौलापार क्षेत्र में प्रस्तावित 26 हेक्टेयर भूमि को स्वीकार करने से इन्कार कर दिया था। हाईकोर्ट का कहना था कि कि इस जमीन का 75 प्रतिशत हिस्सा वन क्षेत्र से घिरा है और नई इमारत बनाने के लिए बड़ी संख्या में पेड़ काटने पड़ सकते हैं। इस वजह से हाईकोर्ट ने राज्य सरकार से एक महीने में दूसरी उपयुक्त जमीन तलाश का निर्देश दिया था। इसबीच हाईकोर्ट को कुमाऊँ से बाहर ऋषिकेश के आईडीपीएल में शिफ्ट करने की बात चली, तक भारी विरोध हुआ। 9 मई से 24 मई 2024 तक चले अभियान में कहा गया कि जनभावनाओं, अधिवक्ताओं और आम जनता की राय को देखते हुए हाईकोर्ट को रोका जाए। अब सुप्रीम कोर्ट ने प्रशासनिक समन्वय से शिफ्टिंग का आदेश दिया है। हाईकोर्ट बार एसोसिएशन के पूर्व अध्यक्ष एम.सी.काण्डपाल ने हाईकोर्ट को नैनीताल से हल्द्वानी शिफ्ट करने के सुप्रीम कोर्ट फैसले को जनता की जीत बताया है। सचमुच, वर्तमान हालातों में हल्द्वानी इसके लिये बेहतर है।

देश-विदेश की प्रमुख घटनाएं

एनर्जी ड्रिंक्स की बिक्री पर रोक

जयपुर। राजस्थान सरकार ने रेड बुल, स्टिंग समेत आठ प्रमुख ब्राण्ड की एनर्जी ड्रिंक्स की बिक्री पर, भण्डारण और प्रचार पर रोक लगा दिया है। दुकानों के साथ यह प्रतिबन्ध आना लाइन प्लेटफार्म पर भी लागू होगा। चिकित्सा एवं स्वास्थ्य विभाग की अलग-अलग टीमों इसके लिये छापेमारी कर रही हैं।

चढ़ावा चोरी की घटना कलंक : नृपेन्द्र

अयोध्या। राजजन्मभूमि मन्दिर समिति के अध्यक्ष नृपेन्द्र मिश्र ने चढ़ावा चोरी प्रकरण को कलंक बताते हुए कहा कि इस घटना से हम सब छोटा महसूस कर रहे हैं। लम्बे संघर्ष और आन्दोलन के बाद रामलला भव्य मन्दिर में विराजे हैं। ऐसे में इस घटना के आघात को समझा जा सकता है।

ज्ञानवापी का समाधान बातचीज से हो

लखनऊ। इस्लामिक सेन्टर ऑफ इण्डिया के अध्यक्ष मौलाना खालिद रशीद फिरंगी महली ने कथित वक्फ जमीन घोटाल, ज्ञानवापी विवाद और किंग जॉर्ज मेडिकल यूनिवर्सिटी के हॉस्टल मेस में मांसाहारी भोजन पर रोक को लेकर अपनी प्रतिक्रिया में कहा कि वक्फ सम्पत्तियों में अनियमितता के आरोप निराधार हैं ज्ञानवापी विवाद का समाधान बातचीज से होना चाहिये।

रूसी तेल खरीदने पर शुल्क

वाशिंगटन। अमेरिका के दोनों प्रमुख दलों रिपब्लिकन पार्टी और डेमोक्रेटिक पार्टी के सांसदों के एक समूह ने सीनेट में एक विधेयक पेश किया है, जिसमें रूस से तेल खरीदने के लिये भारत और चीन समेत 5 देशों पर 100 प्रतिशत तक आयात शुल्क लगाने का प्रस्ताव है।

भारतीय सिख युवती की हत्या

लन्दन। लन्दन में एक हमलावर ने घर के भीतर घुसकर भारतवंशी सिख युवती की चाकू घोंपकर हत्या कर दी। हमले में 25 साल का एक युवक घायल हो गया, जिसका इलाज चल रहा है। मामले में 44 साल के डैनियल शॉन जेम्स को गिरफ्तार किया है।

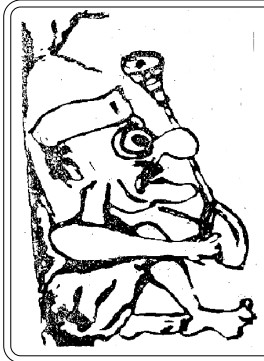

फसक

दाज्यू, पाटी हरा गई, चौपाटी का जोर ठैरा

चुनाव में निपट लेने की बात करते हुए घमाघम हो रही है बल

दाज्यू, हमारे कस्बे में चौपाटी खुल गई है जिसमें भेल-पूरी, टिक्का-डोसा, रबड़-पी, चिक्कू-डौंग, हैप्पी-लोंग, मटर-प्याजा, पटेटो-भुजिया और भी पता नहीं क्या-क्या मिल रहा है बल। दाज्यू, हमारी कुछ समझ नहीं आ रहा है कि जिबड़ी के स्वाद के लिये अटरम-सटरम बहुत कुछ बाजार में सजने लगा है। वैसे छोइछाई के पेट में सब एक ही हो जाने वाला ठैरा। ऊपर से मसालों का भपका लूणेन-गनेन अलग से.....। जब खान पान ही खुसैणी जैसा हो गया है तो बरमाण्ड तो चटकने वाला ही हुआ।

दाज्यू, जमाना कितना बदल गया है। पाटी हरा गई, चौपाटी का जोर है। पहले एक पाटी में कमेट से लिखकर अआ कख बच्चे सीखते थे, अब लाइन वाली कापी, तीन लाइन वाली कापी, फाइल, चित्र वाली फाइन, बस्ता, कलर बहुत कुछ होने लगा है। इसी तरह घर का दाल भात, रोटी-साग कौन पूछे, सब चौपाटी में भेल-पूरी, थोप्पा.....होटल में काली मिर्च का.....ऑनलाइन पीजा, डोसा, क्रीमरौल.....के लिये भुकान हो चुके हैं। जिबड़ी का स्वाद पहचानने वालों ने चौपाटी का रोजगार शुरू कर दिया है। बेरोजगारी में सबकुछ ठीक ही हुआ लेकिन रानीबाग घाट के आसपास भी चौपाटी की मस्ती का प्लान था लेकिन हल्ला मचने के बाद उसे रोक दिया गया।

दाज्यू, खानपान का असर ही तो डड़ाडाड़ करवा रहा है। अब देखो जरा, चुनाव में निपट लेने की बात करते हुए घमाघम हो रही है बल। धारचूला में विधायक धामी ने चुनौती दे डाली है और भाजपा नेता देवली भी ललकार चुके हैं कि इस बार उनकी पार्टी का उम्मीदवार जीतेगा। दाज्यू, सल्ट में देखो चाहे द्वाराहाट में, कपकोट में देखो चाहे कालाढूंगी में गजब ही हो रहा है। दाज्यू, जसपुर में युवक को कार से कुचलकर मार डाला बल। दिन में बालकों के बीच तू-तू-मैं-मैं और धमकीबाजी हुई, रात को ऐसा हुआ। कलजुग में खोपड़ी में खून सवार होता जा रहा है। बागेश्वर के थाना झिरौला पुलिस ने नाबालिक से दुष्कर्म के आरोपित ट्रक चालक को पकड़ लिया। रुद्रपुर जिला मुख्यालय में सौतेले पिता ने अपनी ही नाबालिक बेटी के साथ दुष्कर्म का प्रयास किया। आरोपी हिरासत में है। रानीखेत के ऐना गाँव में 19 वर्षीय सागर सिंह की सिर्फ इसलिये हत्या कर दी गई क्योंकि दूसरे सनकी युवक की स्कूटी पर खरोंच आ गई थी बल। दाज्यू, ये खून सवाल उद्दंडी पता नहीं क्या जो नहीं करेंगे। भवाली में चर्चित नरेश पाण्डे के मामले को जितना खचोरो, उतना बबाल मिल रहा है। यौन शोषण मामले में पुलिस के हाथ नरेश पाण्डे के बाद एक और शिकायत हुई थी। इसमें पहले शिकायत वाली को भी पकड़ लिया गया है और कह रहे हैं वह भी सटर-पटर में लगी रहती थी। अभी पता नहीं खचोर-खचोर कर क्या जो निकलने वाला है।

दाज्यू, हमारी खोपड़ी में तो अयोध्या के राममन्दिर के दान की चोरी-चकारी को लेकर गुस्सा चढ़ रहा है लेकिन क्या करें, किसको कहें चोर? आर.एस.एस. ने दानपेटी में हेराफेरी पर दुख जता दिया है बल। सुप्रीम कोर्ट भी जाँच की रिपोर्ट मांग रहा है। मामले में चम्पत राय की कहानी अलग से सुनने को मिल रही है। दाज्यू, अपने बदरी-केदार मन्दिर में दान राशि का भी भरपूर उपयोग हो गया ठैरा, भगवान जाने आगे क्या होगा। जाँच-पड़ताल में उघड़ रहा है काफी कुछ.....वीआईपी स्वागत-सत्कार होता रहता था बल।

रुद्रपुर में रुहेलखण्ड विश्वविद्यालय के सेवानिवृत्त कुलपति को डिजिटल अरेस्ट कर 1.47 करोड़ रुपये की साइबर ठगी करने वाले गिरोह का सदस्य हरियाणा के अम्बाला से गिरफ्तार हो चुका है। दाज्यू, नगर पंचातय नानकमत्ता के चैयरमैन ने अधिशासी अधिकारी पर फर्जी तरीके से लिपिक पद पर नियुक्ति पाने का आरोप लगाया है। ईओ साब आरोपों को निराधार बता रहे हैं। दाज्यू, पिथौरागढ़ पुलिस ने इस बार नानकमत्ता से स्मैक भेजने वाला सप्लायर पकड़ा है बल। मैदान से पहाड़ को स्मैक और पहाड़ से मैदान को चरस सप्लाई को कुटीर उद्योग मान बैठे थे बुब्बड़ सिंह।

पाटी की पढ़ाई कहाँ, अब तो सब चौपाटी भेल-पूड़ी हो गये ठैरे। प्रदेश के पूर्व मुख्य सचिव एस.रामास्वामी का सुपुत्र फर्जी आईपीएस बनकर ठगी करने में पकड़ा गया बल। देहरादून पुलिस ने उसके घर से वर्दियां, आईडी कार्ड और वायरलेस सेट बरामद किया है। भगवान सबको सद्बुद्धि दे। -तुम्हारा भुली झकरुवा

इमला का बचपन.....

प्रथम पृष्ठ का शेष

बताते हैं कि कोटाल गाँव, गोल्फा, इमला का एक एक प्राइमरी स्कूल है- जसपुर खान। 1963 में शुरू हुए इस स्कूल में इन तानों गाँवों के सभी बच्चे पढ़ने जाते थे। आज भी ये स्कूल शिक्षा की नींव माना जाता है। जसपुरखान इमला की विरासत है। इमला से प्राइमरी के बाद प्रेम सिंह जी ने मदकोट से हाईस्कूल, मुनस्यारी से इण्टर फिर नैनीताल से स्नातकोत्तर किया। 1989 में बैंकिंग सेवा आते हुए इनकी पहली पोस्टिंग इलाहाबाद बैंक मलिहाबाद, लखनऊ में हुई। दस साल ठहराव के बाद नैनीताल फिर लखीमपुर में इनकी सेवा रही। इसके बाद उत्तराखण्ड में शेष सेवा काल रहा और सन् 2003 में हल्द्वानी में वरिष्ठ प्रबन्धक के रूप में सेवानिवृत्त हुए।

अपने बचपन, शिक्षा और बैंकिंग सेवा के लम्बे सफर में श्री जंगपांगी को बचपन हमेशा याद रहा है। वह बताते हैं- जब वह 7-8 में पढ़ते थे, इमला गाँव में रामलीला शुरू हुई। गोकुल राम तालीम करवाते थे, बाद में गोविन्द सिंह पंचपाल तालीम देने आए। उस समय के जिस भी युवा ने रामलीला में पात्र की भूमिका निभाई, संयोग से सभी नौकरी में लग गये। अपनी जन्मभूमि को लेकर वह कहते हैं- कृषि कौर घरेलू उद्योग-धन्धों से जुड़े कर्मठ लोगों की भूमि है इमला। बरपटिया समाज ने कृषि में उन्नत स्थान बनाया, वहीं शौका समाज ने ऊनी कारोबार को बढ़ावा दिया। मदकोट का यह क्षेत्र जितना उपजाऊ है उतना ही संस्कार और सीख देने वाला भी है। वह बताते हैं कि मल्ला दुम्मर में होने वाली हरि प्रदर्शनी के लिये बुजुर्गवार घोड़ों सहित अन्य सामग्री के साथ जाते थे। तब प्रदर्शनी में पशुओं की प्रदर्शनी मुख्य रूप से लगती थी। घरेलू कुटीर उद्योगों को प्रोत्साहित करने के लिये लगने वाली प्रदर्शनी में दन-कालीन इत्यादि सामान इमला से तक लाया जाता था। इस बहाने अपने इष्ट-मित्रों से भेंटघाट का अवसर भी होता। यह प्रदर्शनी वर्तमान तक भी वदस्तूर जारी है और इसमें नई पीढ़ी के लोग जुड़ रहे हैं।

प्रेम सिंह जी का विवाह बूंगा, मुनस्यारी के रावत परिवार में हुआ। अपने समय के प्रधान जोत सिंह रावत श्रीमती लीला रावत की सुपुत्री प्रभा जी से हुआ। श्रीमती प्रभा शिक्षा विभाग से जुड़ी हैं। मुनस्यारी से अपनी सेवा का का सफर आरम्भ करते हुए वह धुलई, घोड़ाखाल में रहीं। इसके बाद जूनियर हाईस्कूल भीमपुर, कमोला (नैनीताल) में सेवारत हैं। इनके सुपुत्र मयंक जंगपांगी जेएनयू से शिक्षा के बाद दिल्ली में और सुपुत्री शिवानी बंगलौर में हैं। वाकेई हम जिन दुर्गम क्षेत्रों को बेढप मान लेते हैं, वहीं से उपजे लोग अपनी जीवटता और ईमानदारी से किस प्रकार रास्ते बनाते हैं, यह प्रेम सिंह जंगपांगी के सफर से सीखने को मिलता है।

Print to PDF without this message by purchasing novaPDF (http://www.novapdf.com/)

घपलत

आस्था पर प्रहार करने वाले बेनकाब हों

दान की रकम पचाने वालों पर बेहद गुस्सा बसर रहा है

आतिथ्य में केदारनाथ धाम के अधिकारी फंसे

अध्यक्ष हेमन्त द्विवेदी से सवाल ही सवाल हैं

गोदियाल की बात के बार द्विवेदी की प्रेसवार्ता

दान गणना से खजांची को हटाया गया

बीकेटीसी कर्मचारी को गिरफ्तार किया है

प्रमोद की नियुक्ति और पदोन्नतियों की जाँच

रुद्रप्रयाग। बदरी-केदार मन्दिर समिति की ओर से दान की राशि में घपले पर सख्ती और ईमानदारी से जाँच की बात कही जा रही है लेकिन इसकी जड़ कहाँ पर है लोग इसे जानना चाहते हैं। जनमानास चाहता है कि आस्था पर प्रहार करने वाले बेनकाब हों। जिस आस्था से लोग इन बड़े मन्दिरों में पूजने जाते हैं और श्रद्धापूर्वक दान करते हैं, उस राशि का दुरुपयोग करने वाले कौन हैं उनकी पकड़ होनी चाहिये। बल्कि राजनीति के ऐसे प्रभावशाली लोगों का चरित्र उजागर होना चाहिये। यह भी उल्लेखनीय है है कि वीकेटीसी के अध्यक्ष हेमन्त द्विवेदी को लेकर हक-हकूकधारियों व पण्डों ने पहले से ही मोर्चा खोला हुआ है। उनपर सवाल दागे जा रहे हैं। अब जबकि दान के पैसे वाला मामला उजागर हुआ है विपक्ष ने खुलकर द्विवेदी से सवाल किये हैं। द्विवेदी द्वारा बयानबाजी और चुनौती दी जा रही थी लेकिन जब देहरादून प्रेस क्लक पर कांग्रेस अध्यक्ष गणेश गोदियाल पहुँचे तो द्विवेदी चुनौती देने के बाद खुद ही ही नहीं आए। आखिर बदरी-केदार मन्दिर समिति का पूरा सिस्टम क्या है इस पर साफ-सुथरा पता होना ही चाहिये। गोदियाल के प्रेस के सम्मुख दहाड़ने के बाद जिस प्रकार से चर्चा होने लगी थी अगले दिन समिति के अध्यक्ष हेमन्त द्विवेदी ने प्रेसवार्ता की और कहा- 'ईश्वर को साक्षी मानकर बदरीनाथ के प्रांगण में आने को तैयार हूँ। मैं उनका पेड सर्वेंट थोड़ा ही हूँ जो उनके (गोदियाल) के कहने पर प्रेस क्लब क्यों जाता। आदमी किसी भी जाँच से बच जाएगा लेकिन भगवान के प्रांगण से नहीं बच सकता है।' द्विवेदी की पत्रकार वार्ता के बाद राजनीतिक रंग भी खूब दिखने लगा है।

दान की रकम पचाने वालों पर जनता का बेहद गुस्सा बरस रहा है, इसे देखते हुए समिति और सरकार एक्सन में है और परतें खुलने की बात हो रही है। बीकेटीसी की जाँच में पता चला है कि आतिथ्य सत्कार पर खर्च के लिए पिछले यात्राकाल में समिति के कोष से बिना सक्षम अधिकारी की स्वीकृति के लगभग 6.5 लाख की राशि अग्रिम लेकर खर्च की गई। शासन ने इसे वित्तीय अनियमितता मानते हुए केदारनाथ धाम के तत्कालीन व्यवस्थापक व मुख्य अधिकारी बीकेटीसी के तत्कालीन मुख्य कार्याधिकारी की भूमिका को संदिग्ध पया है। मामले में सम्बन्धित अधिकारियों के विरुद्ध कार्रवाई के निर्देश दिए हैं।

वीकेटीसी के सदस्य कहते हैं कि यात्रा सीजन में विभिन्न व्यवस्थाओं के लिये वर्षों से अग्रिम धनराशि जारी कर भुगतान करने की परम्परा रही है। वीआईपी आतिथ्य का खर्च भी इसी अग्रिम राशि से किया गया। अब समिति के अध्यक्ष हेमन्त द्विवेदी का कहना है कि वित्तीय पारदर्शिता और जवाबदेही सुनिश्चित करने के लिये सुधारात्मक कदम उठाए जा रहे हैं। भविष्य में बिना सक्षम स्वीकृति के किसी प्रकार का अग्रिम भुगतान नहीं किया जाएगा।

इस बीच बदरीनाथ मन्दिर के चढ़ावे में चोरी के आरोप में चमोली पुलिस ने वीकेटीसी के कर्मचारी प्रमोद नौटियाल को गिरफ्तार किया है। मन्दिर समिति के प्रभारी अधिकारी युद्धवीर पुष्पवान ने कोतवाली में मामला दर्ज कराया था कि दो जुलाई को बदरीनाथ मन्दिर में थाली भेंट की गणना के दौरान वित्तीय अनियमितता की सूचना मिली है। सीसीटीवी फुटेज के आधार पर आरोपी पकड़ा गया। नौटियाल ने उन पर लगे सभी आरोपों को निराधार बताया है।

जाँच के दौरान बीकेटीसी ने दान गणना के खजांची सन्देश मेहता को हटा दिया है। उसके स्थान पर पूजा कार्यालय से केदार सिंह रावत को खजांची की जिम्मेदारी सौंपी गई है। इसके अलावा चढ़ावा प्रकरण में अन्य कर्मचारियों को भी कारण बताओ नोटिस जारी हुए हैं। बदरी-केदार मन्दिर में प्रमोद नौटियाल की नियुक्ति, पदोन्नति और लगातार महत्वपूर्ण जिम्मेदारियां अब एजेंसियों के निशाने पर हैं। 2003 से वर्ष 2026 तक हुई नियुक्तियों और पदोन्नतियों में निधरित नियमों और प्रक्रियाओं का पालन किया गया था या नहीं। प्रमोद नौटियाल की सेवा यात्रा वर्ष 2003 में संविदा कर्मचारी के रूप में शुरू हुई। 2014 में उन्हें इंटरनेट कोऑडिनेटर के पद पर स्थायी नियुक्ति मिली। इसके बाद 2027 में बीकेटीसी के अध्यक्ष के वैयक्तिक सहायक के पद, 2025 में निजी सचिव बनाया गया। इसके अलावा प्रोटोकॉल अधिकारी और थाली भेंट गणना जैसे सम्वेदनशील एवं महत्वपूर्ण कार्यों की जिम्मेदारी भी सौंपी गई। अप्रैल 2026 में उनकी तैनाती बदरीनाथ में कर दी गई। जाँच में यह तथ्य भी सामने आया कि इंटरनेट कॉर्डिनेटर का एक एकल पद था, जिस पर नियमानुसार सीधी भर्ती की प्रक्रिया अपनाई जानी चाहिए थी।

शासन स्तर पर गढ़वाल मण्डल आयुक्त आनन्द स्वरूप के नेतृत्व में तीन सदस्यीय समिति जाँच में जुटी है। टीम ने बदरीनाथ धाम पहुँच कर घटना से जुड़े सीसीटीवी फुटेज का निरीक्षण किया और वित्तीय अभिलेखों समेत कई महत्वपूर्ण दस्तावेज अपने कब्जे में लिए।

कुल जमा दिखाई दे रहा है कि घपला उजागर होने के बाद अपने-अपने तर्क और लीपने-पोतने का प्रयास भी है। कांग्रेस के गणेश गोदियाल की चुनौती के बाद भाजपा के हेमन्त द्विवेदी पर सवाल हैं। अपने को पाकसाफ कहने वालों का इतिहास क्या है जनता चटकारे ले रही है। मन्दिर की व्यवस्था से जुड़े लोग और उसमें पीढ़ी दर पीढ़ी सेवा देने वाले खुलकर बोलने लगे हैं कि मन्दिर व्यवस्था की जानकारी न रखने वाले व इस पूरी व्यवस्था से एकदम दूर रहने वालों को मन्दिर समिति के मुखिया जैसे पदों पर क्यों लाया जाता है? सबसे पहले इनकी जाँच हो। इनके कार्यों और इनके पुराने मामलों की सार्वजनिक किया जाए।

ज्योतिष की बातें 291

27 जुलाई 2026 को शनि मीन राशि में वक्री हो जाएगा। अत: अगले साढ़े चार माह तक शनि के शुभाशुभ फलों में प्रबलता प्रतीत होगी।

1 अगस्त 2026 को शुक्र अपनी नीचराशि कन्या में प्रवेश करेगा। वहाँ पर पापग्रह मंगल व शनि की ख्रष्टि भी होगी अत: बहुत निर्बल रहेगा। फिर भी शुक्र सांसारिक सुख आदि अपने कारक विषयों में अगले 31 दिन वृषभ, मिथुन, कर्क, सिंह, कन्या, तुला, वृश्चिक, मकर और कुम्भ राशि के जातकों को अल्पमात्रा में शुभफल प्रदान करेगा।

2 अगस्त 2026 को मंगल शत्रुराशि मिथुन में प्रवेश करेगा जहाँ पर कोई शुभाशुभ दृष्टि या युति भी नहीं होगी अत: मंगल निर्बल रहेगा। फिर भी फलदीपिका के अनुसार मंगल पराक्रम आदि अपने कारक विषयों में अगले 48 दिन मेष, मकर, सिंह व कर्क राशि के जातकों को अल्पमात्र में शुभफल प्रदान करेगा अन्य राशियों को अभी प्रतीक्षा करनी चाहिए।

गुरु पूर्णिमा- आषाढ़ शुक्ल पूर्णिमा उदयव्यापिनी तिथि में गुरु पूर्णिमा का पर्व मनाया जाता है। तदनुसार बुधवार 29 जुलाई 2026 को भगवान विष्णु के अंशावतार कृष्ण द्वैपायन बादरायण भगवान वेदव्यास की जयन्ती मनाई जाएगी। इस दिन भगवान व्यास का पूजन कर उनके द्वारा लिखित ब्रह्मसूत्र आदि किसी ग्रन्थ का पारायण करना चाहिए।

शुभं भवतु !!

-ओंकार नाथ कोष्टा
ज्योतिर्विद् एवं आयुर्विद्

सम्यक् विचार 274

पासपोर्ट और वीजा का औचित्य

आजकल विश्व के सभी देशों में पासपोर्ट और वीजा का प्रचलन पाया जाता है। मन में प्रश्न पैदा होता है कि क्या स्वामी विवेकानन्द अमेरिका गये थे तो वहाँ का वीजा बनवाकर गए थे? गुरु नानक जी 500 वर्ष पूर्व यूरोप की यात्रा पर क्या वीजा और पासपोर्ट बनवा कर गए थे? प्राचीनकाल और मध्यकाल में भी दुनिया भर के देशों के लोगों का पूरी दुनिया में शिक्षा, व्यापार आदि के लिए सहज आवागमन निरन्तर होता रहता था। क्या वे अपने देश का पासपोर्ट और विदेश का वीजा लेकर जाया करते थे?

ऐसा नहीं है। प्रथम विश्व युद्ध के बाद 1920 में 'राष्ट्र संघ' ने पासपोर्ट का प्रारूप जारी किया था। उस प्रारूप को बिना किसी आवश्यकता के और बिना किसी कारण के समस्त देशों ने स्वीकार कर लिया। सन् 1920 में ही किसी भी देश की यात्रा के लिए पासपोर्ट-वीजा का प्रचलन प्रारम्भ हो गया। मेरे विचार से इससे बिना किसी पर्याप्त कारण के आम आदमी के आवागमन में व्यवधान पैदा किया गया।

वर्तमान समय में अब बहुत से देशों ने एक दूसरे देशों में आने जाने के लिए इस सिस्टम को बन्द कर दिया है। यूरोप के कई देशों में बिना किसी वीजा के यात्रा होती है। भारत को भी चाहिए कि अपने मित्र देशों और अखण्ड भारत के अन्तर्गत आने वाले सभी देशों में बिना किसी पासपोर्ट या वीजा के आवागमन सम्भव हो इसकी योजना बनाना चाहिए। यह मेरा अपना विचार है। किसी का सहमत होना आवश्यक नहीं है।

-ओंकार नाथ कोष्टा

मतदाता सूची में 13 अगस्त तक दर्ज होंगी दावे-आपत्तियां

देहरादून। मतदाता सूची को शुद्ध, अद्यतन और त्रुटिरहित बनाने के उद्देश्य से चलाएगए गहन पुनरीक्षण अभियान के बाद देहरादून जिले की मतदाता सूची का ड्राफ्ट रोल (प्रथम प्रारूप) 14 जुलाई को प्रकाशित हो चुका था। इसके प्रकाशन के साथ ही मतदाताओं को सूची में नाम जोड़ने, संसोधन कराने और आपत्तियां दर्ज कराने का अवसर भी दिया गया है। जिलाधिकारी एवं जिला निर्वाचन अधिकारी डॉ. आशीष चौहान ने मान्यता प्राप्त राजनीतिक दलों के प्रतिनिधियों के साथ बैठक कर उन्हें मतदाता सूची का ड्राफ्ट रोल उपलब्ध कराया। साथ ही बताया कि संशोधन या किसी प्रकार की आपत्ति दर्ज कराने के लये 13 अगस्त तक का समय निर्धारित किया गया है। वेबसाइट और मोबाइल एप के माध्यम से भी ऑनलाइन आवेदन की सुविधा उपलब्ध रहेगी।

गजब हो रहा

रानीबाग मुक्तिधाम के पास चौपाटी ध्वस्त हुई

हल्द्वानी। सोशल मीडिया की रंगीनियत में गजब हो रहा है। किसी न किसी तरह अपने को सामाजिक कार्यकर्ता दिखाने की होड़ में हायतौबा दिखाई दे रही है। इसके अलावा इन्हीं के द्वारा वह कार्य किये जा रहे हैं उलझन भरे हैं। ऐसा ही एक ताजा मामला रानीबाग मुक्तिधाम के पास हुआ जहाँ फेसबुक में सम्वाद करने वाली चर्चित महिला द्वारा चौपाटी खोलने का भव्य आयोजन किया गया। यह सब अकेले के बस की बात नहीं, इसमें मिलकर बड़ा कारोबार की तैयारी दिखाई दी। उद्घाटन के साथ ही इसका शोर शुरू हो गया। लेकिन मुक्तिधाम के पास इस प्रकार से चौपाटी खोलने का जबर्दस्त विरोध हुआ और प्रशासन के पास शिकायत पहुँची कि जिस जगह यह उद्घाटन हुआ है वह भूमि किसकी है? रानीबाग मुक्तिधाम के पास किस प्रकार से जमीनों को घेरने का षड्यन्त्र चल रहा है? शिकायत पर प्रशासन ने कार्रवाही करते हुए चौपाटी को मशीन लगाकर ध्वस्त किया और उसे सील कर दिया। इसके बाद सवाल अभी उपज ही रहे हैं।

स्मार्ट मीटरों के खिलाफ जनाक्रोश

हल्द्वानी। स्मार्ट बिजली मीटरों को लेकर बढ़ते विरोध के बीच जबर्दस्त प्रदर्शन हुआ है। बुद्ध पार्क से शुरू हुआ विरोध मार्च एसडीएम कोर्ट परिसर तक पहुँचा, जहाँ प्रदर्शनकारियों ने सिटी मजिस्ट्रेट के माध्यम से मुख्यमंत्री को ज्ञापन सौंपा। आरोप है कि स्मार्ट मीटर लगाए जाने के बाद बड़ी संख्या में उपभोक्ताओं के बिजली बिलों में अचानक भारी वृद्धि हुई है, जिससे आम परिवारों पर अतिरिक्त बोझ पड़ रहा है। उनका कहना है कि जब तक पूरे मामले की निष्पक्ष जाँच नहीं हो जाती, विवादित बिजली बिलों की वसूली तत्काल रोकी जाए। इसके अलावा सांसद अजय भट्ट के पास भी आक्रोशित लोगों ने बात रखी।

Print to PDF without this message by purchasing novaPDF (http://www.novapdf.com/)

कालेजों के निर्माण कार्यों की समीक्षा होगी

देहरादून। उच्चशिक्षा विभाग ने राजकीय महाविद्यालयों में निर्माण कार्यों की हर माह समीक्षा का निर्ण लिया है। निर्धारित समय में कार्य पूरा नहीं करने वाली कार्यदायी संस्थाओं के खिलाफ कार्रवाई की जाएगी। साथ ही छात्रसंघ चुनाव समय पर कराने, छात्राओं की 50 प्रतिशत भागीदारी सुनिश्चित की जाएगी। शिक्षा मंत्री डा. धन सिंह रावत ने बैठक में निर्देश दिये।

पद्मश्री अनूप साह ने उठाए सवाल

नैनीताल। प्रसिद्ध फोटोग्राफर पद्श्री अनूप साह ने शहर में लम्बे समय से हा`रही पेयजल की बर्बादी का मुद्दा उठाया है। बताया कि बर्फ खड्ड स्थित उनके भूखण्ड में पिछले करीब एक वर्ष से पेयजल लाइन क्षतिग्रस्त है, जिससे लगातार बड़ी मात्रा में पीने योग्य पानी व्यर्थ बह रहा है

किच्छा में मिनी स्टेडियम की सौगात

किच्छा। जिला स्तरीय विकास प्राधिकरण के उपाध्यक्ष जय किशन ने पूर्व विधायक राजेश शुक्ला के साथ इन्दिरा गांधी खेल मैदान का स्थलीय निरीक्षण करने के बाद इसको मिनी स्टेडियम के रूप में विकसित करने की मांग सीएम से रखी थी। अब इसकी डीपीआर और एस्टीमेट तैयार कर स्वीकृति का काम चल रहा है।

कांवड़ यात्रा को लेकर निरीक्षण

हरिद्वार। कांवड़ यात्रा के दृष्टिगत डीएम मयूर दीक्षित एवं एसएसपी नवनीत सिंह ने मेला क्षेत्र के विभिन्न स्थलों का व्यापक स्थलीय निरीक्षण किया। मनसा देवी, हिल बाईपास, मोतीचूर, भूपतवाला, चण्डी चौक, नजीबाबाद रोड, नमामि गंगे घाट में तय सीमा के भीतर कार्य करने के निर्देश भी दिये।

जागेश्वर धाम में श्रद्धालुओं का तांता

दन्या/अल्मोड़ा। प्रसिद्ध जागेश्वर धाम में सावन की पूजा के लिये श्रद्धालुओं का तांता लगा हुआ है। मेले का शुभारम्भ सीएम पुष्कर धामी ने करते हुए कहा कि हमारी धार्मिक और सांस्कृतिक विरासत राज्य की सबसे बड़ी पहचान है। श्रावणी मेला अगस्त तक जारी रहेगा।

अमृतपुर बाईपास पुल निर्माण तैयारी

हल्द्वानी। लोनिवि ने अमृतपुर-काठगोदाम बाईपास निर्माण को लेकर प्रस्तावित सड़क के लिये कार्यवाही शुरू कर दी है। सड़क के दूसरे छोर पर पुल निर्माण होना है, इसलिये नदी किनारे जंगल में पेड़ों का कटान कर एप्रोच रोड तैयार की जा रही है। शासन से मंजूरी मिलने के बाद लोनिवि ने पिछले दिनों काठगोदाम में गौला पुल के समीप से बाईपास निर्माण के लिये पहाड़ी कटान का काम शुरू किया था।

परिक्रमा

फचैऽक

रात भरि नाचछियां झ्वाड़न में, कसि निखौरी रंगत हुंछि
लम्मि बाखइक वां खा्वन में, स्यैणि बैगनकि पंगत हुंछि
स्यैणि बैगनकि पंगत हुंछि, आ्ब डीजेन में सब थिरकनी
उटपटांग फिल्मी गीतन में, ना्नठुल सब जाणि बमकनी
जां न पुजि सड़क आजि तक, डीजे पुजौ वां घ्वाड़न में
निसास लागूं याद ऐजैं, रात भरि नाचछियां झ्वाड़न में।

गणेश पाण्डेय

टपकपुर कालेज में सुधार की जरूरत

टनकपुर। राजकीय महाविद्यालय टनकपुर में आये दिन होने वाले हंगामे को देख कहा जा सकता है कि यह शिक्षा से ज्यादा घपलेबाजी का अड्डा बनते जा रहा है। नया शिक्षा सत्र शुरू होते ही छात्र नेताओं के प्रदर्शन के साथ फिर से यह देखा गया है। बताया जाता है कि चुनाव प्रचार को लेकर छात्र नेताओं द्वारा बैनर लगाने को लेकर बबाल मचा। एक पक्ष का बैनर हटाने पर एनएसयूआई ने प्राचार्य के खिलाफ मोर्चा खोल दिया। उल्लेखनीय है कि इस कालेज में कई प्रकार के विवाद पहले से रहे हैं। इस बीच स्थानान्तरण में कई शिक्षकों के जाने के बाद नया स्टाफ आया है लेकिन अभी भी सवाल उठ रहे हैं। पिछले सत्र में अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद के जबर्दस्त विरोध के बाद भूगोल के शिक्षक को हटा कर अन्यत्र भेजा गया था लेकिन उन्हें फिर से लाया गया। इसी प्रकार अन्य जाँचों की मांग को लेकर छात्र प्रदर्शन करते रहे हैं। स्टाफ के बीच भी तनातनी देखी जाती रही है। ऐसे माहौल में सभी आश्चर्य कर रहे हैं कि किस प्रकार का कालेज संचालन हो रहा होगा? कालेज सुधार के लिये बहुत जरूरत है क्योंकि यह सीएम के विधानसभा क्षेत्र का कालेज है जिसका संचालन लड़खड़ाया हुआ बताया जाता है। ये पूरी उच्चशिक्षा के लिये बड़ी चुनौती बन चुका है।

गणाईगंगोली विकास खण्ड बनाया जाए

गंगोलीहाट। गणाई गंगोली को अलग विकास खण्ड बनाने की मांग एक बार फिर से मुखर हो चुकी है। क्षेत्रवासियों का कहना है कि विकासखण्ड से जुड़े कार्यों के लिये 80 किमी दूर गंगोलीहाट जाना पड़ता है।

पाँच दशक पुरानी अपने मांग को लेकर सामाजिक संगठन और जनप्रतिनिधि चेतावनी दे चुके हैं कि यदि सुनवाई नहीं हुई तो आन्दोलन भड़क सकता है। कनिष्ठ प्रमुख कविता डोबाल का कहना है कि 55 साल से गणाई को अलग विकासखण्ड बनाने की मांग की जा रही है लेकिन कोई सुनवाई नहीं हुई। ऐसे में क्षेत्र की जनता आन्दोलन को मजबूर हो चुकी है। ग्राम प्रधान सिमलता नीरज सूंठा का कहना है सरकार विधानसभा चुनाव से पहले गणाईगंगोली को अलग ब्लाक बना दे। ऐसा न होने पर आन्दोलन ही रास्ता है। बताते चलें कि 1970 से क्षेत्र की यह मांग उठती रही है।

कैलास मानसरोवर यात्री दलों का स्वागत

टनकपुर/धारचूला। कैलास मानसरोवर यात्री दलों के आने का क्रम जारी है। इसमें टनकपुर होते हुए जा रहे दलों का स्वागत किया जा रहा है। दिल्ली से काठगोदाम मार्गीय सुविधा के स्थल टीआरसी में यात्रियों के आगमन पर स्वागत किया गया। इसके बाद अभी तक टनकपुर से पाँच यात्री दल आगे रवाना हो चुके हैं। टीआरसी पहुँचने पर यात्रियों का स्वागत किया गया। चौथे दल के लाइजनिंग अधिकारी हरियाणा के सुमित भाटिया, बिहार के लक्ष्मी चन्द्र हैं। यात्री दलों का टनकपुर में स्वागत के बाद उन्हें धारचूला के लिये रवाना किया जा रहा है। धारचूला में कुमाऊँ मण्डल विकास निगम द्वारा की गई यात्रा व्यवस्था के तहत यात्री दलों को समयानुसार आगे की यात्रा करवाई जा रही है। मौसम को देखते हुए प्रशासन द्वारा यात्रा मार्ग पर अतिरिक्त तैनाती की गई है ताकि यात्रा के दौरान किसी प्रकार की अड़चन न हो। धारचूला से आगे पड़ावों में होते हुए चीन सीमा में प्रवेश कर यात्री दल कैलास मानसरोवर की परिक्रमा कर रहे हैं।

प्रवेश प्रक्रिया के बीच नेतागर्दी शुरू

इन दिनों महाविद्यालयां में प्रवेश प्रक्रिया चल रही है और नव प्रवेशित छात्रों के दस्तावेज सत्यापन आदि का कार्य चल रहा है। इस अवसर को छात्र नेता अपने लिये उपयोगी मानते हुए नेतागर्दी खुलकर करने लगे हैं। बड़ी संख्या वाले हल्द्वानी के एमबीपीजी कालेज सहित प्रदेश के सीमित संख्या वाले नये कालेजों तक नेता बनने की हसरत रखने वाले छात्र नये छात्र-छात्राओं की मदद के बहाने दखल कर रहे हैं। ऐसे में कई बार आपसी तकरार व कालेज प्रशासन के साथ ही बहस के समाचार मिले हैं। माना जा रहा है कि 2027 के विधानसभा चुनाव को देखते हुए वरिष्ठ छात्र नेता ज्यादा सक्रिय हैं क्योंकि उन्हें बाहर से संरक्षण भी मिलता रहा है। ऐसे में आने वाले दिनों में प्रवेश प्रक्रिया के समय वातावरण और भी ज्यादा गहमागहमी वाला होने का अंदेशा है। पुलिस प्रशासन के लिये भी यह चुनौती का कार्य है।

नैनीतालवासी हैरान हैं

सरोवर नगरी को संवारने के नाम पर नित हो रहे खेलों में आवाज कौन सुनेगा?

नैनीताल को पर्यटन के नाम पर भूखे के भाव ठूंस दिये जाने जैसा हो रहा है। सरोवर नगरी का आकर्षण इसकी झील के अलावा इसकी बात-व्यहवार करती थी लेकिन इस शहर को संवारने के नाम पर नित हो रहे खेलों में अब किसकी आवाज कौन सुनेगा? नैनीताल के सुन्दरीकरण को लेकर शासन-प्रशासन ने जिस तरह की कमर कसी, उसके लिये यहाँ के वाशिन्दों को अनसुना कर दिया गया। तल्लीताल में गांधी की मूर्ति के समक्ष कई दिनों तक प्रदर्शन हुआ लेकिन नैनीताल का श्रृंगार करने की प्रशासनिक जिद के आगे किसकी चलती। इसके बाद डाकघर के पुराने भवन सहित ऐतिहासिक धरोहरों को बचाने के लिये आवाज उठती रही है। पर्यटन का हल्ला ज्यादा है जबकि भीड़ का शोर और जाम से लोग परेशान हैं। इस बीच लेक ब्रिज चुंगी पर बराबर बहसबाजी देखने को मिली। हाल ही में जब चुंगी को ठेके पर दिया गया तो फांसी गधेरा चुंगी पर दूसरे ही दिन भारी हंगामा हुआ। लोग हैरान हैं कि दुपहिया वाहनों से भी सौ रुपया वसूली किया जा रहा था। क्षेत्रवासियों व अधिवक्ताओं के प्रदर्शन के बाद शुल्क वसूली के फैसले को स्थगित किया गया।

मसूरी-कैंपटी मार्ग कई जगह टूटा

देहरादून। भारी बारिश के कारण मसूरी कैंपटी मार्ग कई जगह क्षतिग्रस्त हो चुका है जबकि जगह-जगह पहाड़ियों से मलबा और पत्थर गिरने से यातायात भी प्रभावित हो रहा है।

नैनीताल आउटहास मार्ग पर सड़क धंसी

नैनीताल। सेंट जोसेफ्स कॉलेज के पास आउटहाउस की ओर जाने वाले मुख्य मार्ग पर सड़क का बड़ा हिस्सा धंसने से आवागमन में खतरा बना हुआ है। सड़क के बीचोंबीच बने इस गड्ढे के कारण किसी भी समय हादसा हो सकता है।

कवाधार में शराब पर रोक का निर्णय

पिथौरागढ़। कवाधार गाँव में शराबबन्दी के लिये पंचायत ने सख्त नियम लागू करने का निर्णय लिया है। प्रधान सुरेन्द्र सिंह की अध्यक्षता में आयोजित खुली बैठक में प्रस्ताव तय किया गया कि ग्राम पंचायत क्षेत्र में शराब सेवन, बिक्री, सार्वजनिक आयोजनों में शराब परोसने पर पूर्ण प्रतिबन्ध रहेगा। नियम तोड़ने वाले पर 20 हजार का जुर्माना लगेगा।

अध्यापक पात्रता परीक्षा 29सितम्बर को

देहरादून। उत्तराखण्ड अध्यापक पात्रता परीक्षा (यूटीईटी) 29 सितम्बर को होगी। उत्तराखण्ड विद्यालयी शिक्षा परिषद के अनुसार इसके लिये तीन अगस्त तक आवेदन किये जाएंगे। सरकारी और अशासकीय विद्यालयों के शिक्षक भी परीक्षा दे सकेंगे। यूटीईटी प्रथम व द्वितीय के लिए परिषद की वेबसाइ पर ऑनलाइन आवेदन आमंत्रित किए गए हैं।

गोविन्द पन्त 'राजू' का सम्मान

देहरादून। उत्तरांचल प्रेस क्लक में आयोजित समारोह में वरिष्ठ पत्रकार गोविन्द पन्त 'राजू' को पत्रकारिता के क्षेत्र में उनके चार दशक से अधिक के उल्लेखनीय योगदान के लिये सम्मानित किया गया। इस अवसर पर पत्रकारों और प्रेस क्लब के पदाधिकारियों ने उनकी साहसिक, निष्पक्ष और जनपक्षधर पत्रकारिता को नई पीढ़ी के लिये प्रेरणास्रोत बताया।

लाखों पौधों के रोपण का दावा

हरेला पर्व पर उत्तराखण्ड में 13 लाख से अधिक पौधों को लगाने का दावा किया जा रहा है। इनमें सबसे अधिक पौधारोपण पिथौरागढ़ में बताया गया है। वृक्षारोपण अभियान अच्छी बात है लेकिन लगाए गये पौधों को बचाने के लिये आगे क्या किया जाएगा, इस पर तैयारी जरूरी है। देखने में आया है कि सरकारी आयोजन मनाने के लिये स्कूल-कालेजों में पौंधे लगाने से ज्यादा फोटोग्राफी पर जोर था।

Print to PDF without this message by purchasing novaPDF (http://www.novapdf.com/)

लोमड़ी और बकरी..

प्रथम पृष्ठ का शेष

को बचाने में सफल रही।' लोमड़ी बोली- 'बहन आज से तुम मेरी परम मित्र हो गयी। गुफा के पास काफी घास है, अत: तुम भी यहीं पर रह लो ताकि हम दोनों का समय भी अच्छा बीत जायेगा तथा हमारी मित्रता देख कर कोई हम लोगों पर हमला करने से पहले कई बार सोचेगा।' प्रस्ताव ठीक था। बकरी मान गई। उसने वहीं पर रहने का इरादा बना लिया। काफी देर तक बातें होती रहीं। लोमड़ी ने देखा कि बकरी के बदन से कई जगह से खून निकल रहा है। बिलाव के पंजों से कई जगह घाव हो गये थे। लोमड़ी ने कहा- 'लाओ बहन तुम्हारे घावों का खून साफ कर दूँ।' यह कह कर उसने घावों पर से खून चाटना शुरू कर दिया। ज्यों ही उसकी जीभ में बकरी का खून लगा, वह मन ही मन विचार करने लगी- 'वाह कितना स्वादिष्ट खून है। जिसका खून ही इतना स्वादिष्ट है, मांस कितना स्वादिष्ट होगा।' उसके मन में ज्यों ही यह भाव आने लगे त्यों ही मन के भीतर से दूसरे भावों ने उसे झकझोर दिया।' नहीं, अपने मित्र के बारे में इस तरह सोचना भी पाप है। अत: उसने बकरी के बदन का खून तो चाट कर साफ कर दिया परन्तु इस भाव से नहीं कि वह किसी शिकार का खून चाट रही थी, केवल कृतज्ञता व सेवा भाव से।

उस दिन के बाद वह दोनों साथ रहने लगे। लोमड़ी किसी दिन शिकार की तलाश में दूर-दूर निकल जाती तो बकरी वहीं आस-पास ही चरती तथा लोमड़ी को बकरी के खून का स्वाद ध्यान आया। अब बकरी के उस पर किये गये उपकार की कृतज्ञता का भाव भी धुंधलाने लगा था। वह मन ही मन ऐसी तरकीबें विचार में लाने लगी कि किस तरह बकरी को मारा जा सके। पर उसने उसके नुकीले सींगों की करामात का दृश्य देखा था। बकरी काफी बलिष्ठ भी थी। फिर भी उसने ऊपरी तौर पर बकरी से मित्रता बनाये रखी। अपनी ओर से उसने उसने कभी भी ऐसी कोई हरकत नहीं की कि बकरी को जरा सा भी सन्देह हो। मित्रता तो उनमें थी ही, कभी-कभार हंसी मजाक भी चलने लगा था। कभी लोमड़ी, जब कोई शिकार करके लाती, तो औपचारिकता वश उससे कहती, 'आओ बहन तुम भी भोजन कर लो', बकरी मुस्करा कर कहती- 'हमें घास ही प्यारा है, तुम्हारा शिकार तुम्हीं को मुबारक हो।' मजाक-मजाक में ही कभी दोनों अपनी-अपनी ताकत का प्रदर्शन करने के लिये आपस में लड़ाई भी करतीं। बकरी तो इसे मजाक में ही लेती परन्तु लोमड़ी इस बहाने यह देख लेती कि बकरी में कितनी ताकत रह गई है। एक दिन जंगल में बारिश हुई। गुफा के पास ही कुछ गड्ढों में पानी भर गया। लोमड़ी ने कहा- 'बहन, पानी पीने में तुम मेरा मुकाबला नहीं कर सकती।' बकरी ने कहा- 'मैं चरती हूँ। उसमें पानी होता ही है, इसलिये पानी कभी-कभार ही पीती हूँ, फिर भी, जहाँ तक मुकाबले का सवाल है, मैं तुमसे अधिक पानी पी सकती हूँ।' लोमड़ी बोली- 'सामने दो गड्ढों में पानी भरा है, चलो, हो जाए मुकाबला। एक गड्ढे का पानी तुम पियो, दूसरे का मैं पीती हूँ। दोनों गड्ढे बराबर हैं।' लोमड़ी ने अपनी एक विवशता भी सुना दी, 'बहन चूंकि मैं पानी जीभ से पीती हूँ, इसलिये मुझे पानी समाप्त करने में जरा समय अधिक लगेगा।' बकरी ने कहा-'कोई बात नहीं, तुम चाहो तो धीरे-धीरे पी सकती हो। देखना तो सिर्फ यह है कि कौन पानी अधिक पी लेता है।'

दोनों एक-एक गड्ढे के पास पहुँच गये। गड्ढों में काफी पानी भरा था। बकरी को प्यास बिल्कुल नहीं थी, पर मुकाबले का प्रश्न था। वह कुछ ही देर में पूरे गड्ढे का पानी पी गई। उधर लोमड़ी अपनी जीभ से यों ही चपड़-चपड़ की आवाज करती रही। उसने पानी बिल्कुल नहीं पिया। बकरी का कपेट पानी से इतना भर गया कि उसका दम सा घुटने लगा। उसने पानी बाहर निकालने के लिये उल्टी करनी चाही, पर वह असफल रही। वह तड़पने लगी। उधर लोमड़ी ने पानी बिल्कुल नहीं पिया। वह अब इस फिराक में थी कि बकरी कब बेहोश हो और वह उस पर झपट पड़े। जब बकरी कुछ निढाल सी हुई तो लोमड़ी यह कह कर उसके पास आई 'बहन तुम्हारे पेट में दर्द हो रहा होगा, लाओ मैं पेट मल दूँ।' उसने बकरी का पेट मलना शुरू किया। उसने अचानक अपना तेज पंजा चुभा दिया। पंजा पेट में चुभा पानी का एक धारा पेट से बाहर निकल आई। लोमड़ी कुछ देर के लिय अलग हट गई। पेट से पानी बाहर निकल आने के कारण बकरी को आराम मि गया। वह उठ खड़ी हुई। पंजे का घाव अधिक नहीं था, अत: उसकी जान बच गई। बकरी का गुस्सा देख कर लोमड़ी घबरा गई। उसके सींगों के बार के डर से वह कांपने लगी। पर संयत होकर उसने बात सम्भाल ली, 'बहन, तुम्हें मुझ पर गुस्सा आना स्वाभाविक है परन्तु तुम्हारी बिगड़ती हालत को देखते हुए मुझे तुम्हारे पेट का पानी बाहर निकालना जरूरी हो गया था। अपने मित्र के पेट में पंजा गड़ाना कोई अच्छी बात तो नहीं किन्तु आपातकाल में जान बचाने के लिये दूसरा खतरा लेना ही पड़ता है। लोमड़ी की बातों से बकरी आश्वस्त हो गई। उसने अपने गुस्से के लिये लोमड़ी से माफी मांग ली। वह यह तो जानती थी कि यदि पेट में छेद न किया जाता तो पानी बाहर कैसे निकलता। अत: उसके मन में लोमड़ी के प्रति कोई दुराव नहीं रहा। फिर उन दोनों की मित्रता चलती रही।

एक दिन बकरी का अपना सूना आँगन आबाद हो गया। उसके दो बच्चे पैदा हुये, दोनों नर थे। उसकी खुशी का ठिकाना न रहा। लोमड़ी के बच्चों को देखते हुए उसे कई बार यह कामना होती थी कि काश उसके यहाँ भी कोई बच्चा होता। उसके बच्चे पैदा होने से जितनी खुशी उसको हुई, उससे कई गुना अधिक खुशी लोमड़ी को हुई। जाहिरा तौर पर तो अपने मित्र के घर बच्चे पैदा होने पर ही उसे खुशी हुई थी, पर इस खुशी का एक बड़ा कारण भी था। उसने सोचा कि कभी न कभी तो बकरी को मारने में सफलता मिलेगी ही, तब वे बच्चे उसके स्वाभाविक ग्राम बनेंगे। फिर, बकरी की पीढ़ी चलती रही तो उसकी (लोमड़ी की) आगामी पीढ़ी का भरण पोषण होता रहेगा।

जब बकरी के दोनों बच्चे कुछ बड़े हुए तो उनके सिर में सींग उगने लगे। यह देख कर लोमड़ी को अच्छा नहीं लगा, क्योंकि यही सींग उसके आड़े आते थे। उसे यह भी डर था कि यही बच्चे बड़े होकर कहीं अपने सींग से उसके बच्चों का पेट न फाड़ दें। अत: उसने काफी सोच विचार के बाद बकरी से कहा, 'बहन तुम तो खैर पुरानी पीढ़ी की हो, पर इन बच्चों के सींग क्यों उगने दे रही हो? यह नई पीढ़ी के बच्चे हैं। तुम देखती ही हो, अब सीगों का फैशन कहाँ रहा है? सिर में तइने बड़े सींग अच्छे थोड़े ही लगते हैं। बच्चे हैं, आजकल के बच्चे सींग रखना अच्छा थोड़े ही मानेंगे। यह तो पिछड़ेपन की निशानी है।' लोमड़ी अपना सिर बकरी को दिखाते हुए फिर बोली- 'हमारी लोमड़ी बिरादरी में तो पहले से ही सींग रखने का फैशन नहीं है। मेरी माँ ने स्वयं अपने हाथों से मेरे सींग तोड़ दिये थे। मैंने भी अपने बच्चों के सींग उगते ही तोड़ दिये थे।' बकरी बोली- 'परन्तु बहन तुम्हारे पंजे में नाखून तो हैं, इन्हें तुमने नहीं निकाला।' लोमड़ी बोली- 'नाखून तो पहले इतने बड़े थे कि शेर के नाखून भी उनके सामने कुछ नहीं थे। वह तो मैंने काट दिये थे। नाखून तो बढ़ते रहते हैं। अब फिर उतने ही बड़े हो जाएंगे तो काट दूंगी।' बकरी ने कहा- 'यह तो बहन ठीक है परन्तु सींग से हम लोग अपनी रक्षा भी तो करते हैं। इसलिये हमारे खानदान के लिये यह जरूरी है।' लोमड़ी तपाक से बोली, 'बहन, अब जमाना बदल गया है। अब हिंसक जीवों का स्वभाव भी काफी हद तक बदल गया है। अब सींगों की सार्थकता, सुरक्षा की दृष्टि से अनावश्यक हो गयी है। फिर, सींग वाले सभी जानवर डरपोक होते हैं और घास खाते हैं, जबकि बिना सींग वाले जानवर साहसी व मांसाहारी होते हैं। अब बैल को ही देख लो, शक्ति में बेजोड़ पर सींगों के कारण इतना पिछड़ा है कि लोग जो चाहें उससे काम करा लेते हैं।' उसने भैंस, भेड़, हिरन व अन्य कई जानवरों के नाम गिना दिये जो सींगधारी परन्तु अहिंसक हैं। दूसरी ओर बिना बिना सींग वाले जानवरों में बाघ, चीता, शेर, भेड़िया, कुत्ता इत्यादि कई जानवरों के नाम उसने लिये जो फुर्ती व ताकत में अन्य जानवरों से आगे थे।

बकरी लोमड़ी के तर्कों के सामने ज्यादा देर टिकी नहीं रह सकी। कुल मिलाकर उसे लगने लगा कि वास्तव में बच्चों के लिये सींगों की अब कोई उपयोगिता नहीं है। उसने लोमड़ी के सहयोग से अपने दोनों बच्चों के सींग जड़ से ही उखाड़ दिये। इस पर लोमड़ी अत्यधिक खुश हुई, उसकी चाल काम आ गई थी परन्तु जब तक स्वयं बकरी के सिर में बड़े-बड़े सींग मौजूद थे, उसकी खुशी अधूरी थी, क्षणिक थी। वह उसके बच्चों का बालबाँका भी नहीं कर सकती थी। वह रोज बकरी से उसके बच्चों की तारीफ करती- 'कितने सुन्दर बच्चे हैं, अब बिना सींग के कितने अच्छे लग रहे हैं। असल में सींग वालों की समाज में ज्यादा इज्जत नहीं होती।' वह रोज कुछ न कुछ तर्क सींग के विरुद्ध देती और फैशन कीदुहाई भी देती। अन्तत: बकरी को भी लगने लगा कि खामख्वाँ सींगों का बोझ सिर पर लादने से क्या फायदा, जबकि फैशन बिना सींगों का चल रहा है। एक दिन एक बड़े पत्थर से टकरा कर उसने अपने दोनों सीगों को जड़ से ही उखाड़ कर फैंक दिया। उसे दर्द तो बहुत हुआ परन्तु प्रसन्नता इस बात की थी कि देर से ही सही, पर पहले के मुकाबले जवान व खूबसूरत दिखती है। उसने सिर के सींग विहीन होते ही लोमड़ी के सिर में खून सवार हो गयां उसने अपने स्वभाव के कारण बकरी के एहसान व उसकी मित्रता ताक पर रख दी। बकरी के सामने ही उसने उसके दोनों बच्चों के नाजुक गले में बारी-बारी से अपने नुकीले दाँत गढ़ा कर गरम खून पी लिया। फिर उसने पेट फाड़ कर खुद बड़े चाव से खाने लगी और अपने बच्चों को भी खिलाया। ऐसा नहीं कि बकरी ने उसका प्रतिरोध न किया हो, पर यह सब बेकार गया। प्रतिरोध करने के लिये उसके पास कुछ रह ही नहीं गया था। वह अब तक स्वयं केवल सींग के बल पर ही जिन्दा रखे हुये थी। जब लोमड़ी उसके बच्चों को खा रही थी, तो उसने गिड़गिड़ा कर उससे अपने बच्चों की जानबख्शी की प्रार्थना की पर लोमड़ी ने साफ कह दिया- 'हम अपने स्वभाव के विपरीत कोई काम नहीं कर रहे, तुम जैसे भोले-भाले जानवरों का शिकार करना हमारा स्वभाव है। भूल तो तुमने की है जो अपना स्वभाव बदल कर तुमने अपना तथा अपने बच्चों का रक्षा कवच उतार फैंका।' उस दिन लोमड़ी तथा उसके बच्चों का पेट भर गया था, अत: लोमड़ी को बकरी को मारने की आवश्यकता नहीं थे, बकरी अब कहीं जा भी नहीं सकती थी। यदि भाग भी जाती तो क्या होता? वह लोमड़ी नहीं तो कोई दूसरा जानवर उसे खा जाता। अगले दिन लोमड़ी ने बकरी की गर्दन में अपने तेज दाँत गढ़ा दिये। वह उसके बदन का सारा खून पी गई। खून पीते हुए उसने बकरी से कहा- 'हम पानी ज्यादा नहीं पीते। हम खून उसी तरह पीते हैं, जिस तरह तुमने पानी पिया था, समझी?' मरते समय बकरी ने यह भी देखा कि लोमड़ी के वही बच्चे, जिनकी जान एक दिन उसने बचाई थी, उसे जिन्दा ही नोच-नोच कर खाने लगे थे।

यादें शेष

नरेन्द्र सिंह पांगती

11 जुलाई 2026 को नोएडा के एक अस्पताल में नरेन्द्र सिंह पांगती(81)का निधन हो गया। अपने इतिहास भूगोल के प्रति शोधपरक दृष्टि रखने वाले पांगती जी 'मिलम निवास', जोहार नगर हल्द्वानी में अपने परिवार के साथ रहते थे। पिछले कुछ समय से अस्वस्थ्य होने के कारण बार-बार दिल्ली जाना उनकी विवशता रही थी।

जोहार के प्रतिष्ठित जसपाल सिंह के परिवार का ही भाग 'मिलम निवास' है। नरेन्द्र सिंह जी के पिता स्व. कल्याण सिंह जी ने सेवानिवृत्त होने के बाद हल्द्वानी में स्थायी रूप से रहने को आवास बनाया। कल्याण सिंह जी एक प्रशासनिक अधिकारी के रूप में जितने कर्तव्यनिष्ठ और समाजिक रूप में जितने मिलनसार थे, उनका प्रभाव नरेन्द्र सिंह जी में था। अपनी यादों का जोहार जो कल्याण सिंह जी ने देखा और जिस प्रकार के दस्तावेज उन्होंने संभाल कर रखे थे, उन्हीं पर नरेन्द्र सिंह जी भी अध्ययन और आगे बढ़ाने का कार्य करते रहे हैं। चिन्तनशील और तर्कपूर्ण बात करने के अलावा वह व्यवहार में खरे व्यक्ति थे। पिघलता हिमालय के हितचिन्तकों में इनका परिवार रहा है। इस नाते भी यह नियमित रूप से मार्गदर्शन करते रहते थे। सामाजिक आपाधापी, बदलाव, सांस्कृतिक परिवेश, परम्पराएं एवं दृढ़ इच्छाशक्ति वालों के सन्दर्भ को लेकर उनकी लम्बी बैठकें 'शक्ति प्रेस' 'पिघलता हिमालय' में रही हैं। पिछले कुछ समय से वह अपने स्वास्थ्य कारणों से हल्द्वानी-दिल्ली के बीच आते-जाते रहे, विश्वास नहीं हो रहा वह हमें छोड़कर जाएंगे। वह अपने पीछे भरापूरा परिवार छोड़ गये हैं। पिघलता हिमालय परिवार स्व. नरेन्द्र सिंह पांगती को श्रद्धांजलि अर्पित करता है।

HIMALAYAN MUNSYARI STORE
Johar Nagar, Bhotia Padav, Haldwani
(एक छत के नीचे अपने हस्तशिल्प, कुटीर उद्योग के उत्पादों का विश्वसनीय प्रतिष्ठान)
मो.- 8755116161. 84779321316 वीरेन्द्र सिंह मपवाल

Print to PDF without this message by purchasing novaPDF (http://www.novapdf.com/)

सावन की घटाएं चहुंओर सुख-समृद्धि दें। शुभकामनाओं के साथ-

विद्याभारती से संबद्ध
रामकुमारी अग्रवाल सरस्वती विद्या मंदिर इंटर कालेज
खटीमा (उ.सिं.न.)
प्रधानाचार्य भगत सिंह बोरा

Heritage Convent School
Vill- Inderpur
Chorgalia (Nainital)

प्रेम सिंह बुर्फाल
(सेनि.मुख्य प्रबन्धक एसबीआई)
वृन्दावन विहार, मल्ली बमौरी, हल्द्वानी

श्रीमती रुक्मणी रावत
आकाश इन्क्लेब, बिठौरिया नं. 1
लालडांट रोड, हल्द्वानी

प्रेम सिंह जंगपांगी
सुरभि कालोनी, मल्ली बमोरी
हल्द्वानी

Hotel
Bala Paradise
Tiksain, Munsiari
Ph. 05961222237, 9412951678

धमोत होम स्टे
धरमघर/चौकोड़ी
(एडवेंचर जोन, ट्रेकिंग, माउंटेन वाइकिंग, स्थानीय व्यंजन)
मो. 9760007148 www.mountainheights.in

न तेरा न मेरा Thats मो. 9458920379
APNA GHAR 6396098804
चौकोड़ी
HOTEL RESTRO BANQUET
Near by- (माँ कोटगाड़ी, नौलिंग देव, पातालभुवनेश्वर)
पितृछाया- स्वतंत्रता संग्राम सेनानी स्व. जोगासिंह मर्तोलिया
YOGA
MEDITATION
HOMELY FOOD
LIVE MUSIC
BIRTHDAY
WEDDING

होटल माँ नन्दादेवी एण्ड बारातघर
नानासेम, मुनस्यारी
गणेश सिंह मर्तोलिया एण्ड सन्स
हार्डवेयर, बिल्डिंग मैटीरियल, जनरल आर्डर सप्लायर्स
फोन सम्पर्क- 05961-222236 मो.- 8958525979, 9411134775

घर से बाहर अपनों का साथ
होटल लक्ष्य इन
मदकोट
नरेन्द्र सिंह रावत
सम्पर्क 7351285555

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक श्रीमती गीता उप्रेती द्वारा पिघलता हिमालय, जे०के०पुरम्, सेक्टर डी, छोटी मुखानी, हल्द्वानी (नैनीताल) उत्तराखण्ड से प्रकाशित एवं शक्ति प्रेस, जे०के०पुरम्, सेक्टर डी, छोटी मुखानी, हल्द्वानी(नैनीताल) से मुद्रित।

सम्पादकः श्रीमती गीता उप्रेती फोन/मोबाइल 9458961490, 9411770280, 9411301014,
editorpighaltahimalay@gmail.com
Website- www.pighaltahimalay.com

Print to PDF without this message by purchasing novaPDF (http://www.novapdf.com/)